

DPN 6395

Title : चतुषष्टि लिंग परिक्रमा CATUṢAṢṬHĪ LINGA PARIKRAMĀ

Run. No. 7086

Cat. No.

Micro. No.

Subject Name and Place ^{of} 64 Lingas. ✓
Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. ✓ New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 17 X 12

Folios 30

Lines (in a page) 7 irregular

✓ Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

✓ Scribe / donor सिद्धिमान सिंह

Date: NS / SS / VS / KS १११

Ruler / place Siddhiman Sinha.

Script : New. ✓ / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu ✓ /

Condition : fine ✓ / damaged by worms, rats, water ✓ /

Beginning, colophon, post-colophon :

□ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्री पशुपतये नमः ॥ श्रीगुलेश्वर्यै नमः ॥ श्री वात्सलायै नमः ॥ श्री वाग्मत्यै नमः ॥
अथ हिमतरवण्डोक्त चतुःषष्टि लिंग परिक्रमो निरूप्यते ॥ P. T. O.

तेपाहापूर्वे मोजने ४ श्रीकुशेश्वरः ॥ तदुतरे लीलावती सुवर्ण कौशिकी
संगमे दुर्गातीर्थ दुम्जान्यासि ॥

△ इति श्री चतुःषष्टि विंगपरिक्रमा नृकमारिका ॥ ॥

सम्बत ६६१ कार्तिक कृष्णमा पंचमी आदित्यवार ध्वजकुण्ड बलख कथन
क्राथव्योया देवरा सिद्धिमान सिंहन स्वार्थदेतुन चोम धनकाजुलो ॥ शुभ
मस्तु सर्वदा ॥ ॥

२१४ मह देव देवीया नां व थाय ॥ क्षेत्रया चित्र ॥

25

20

15

10

5

0

CMS

5

10

15

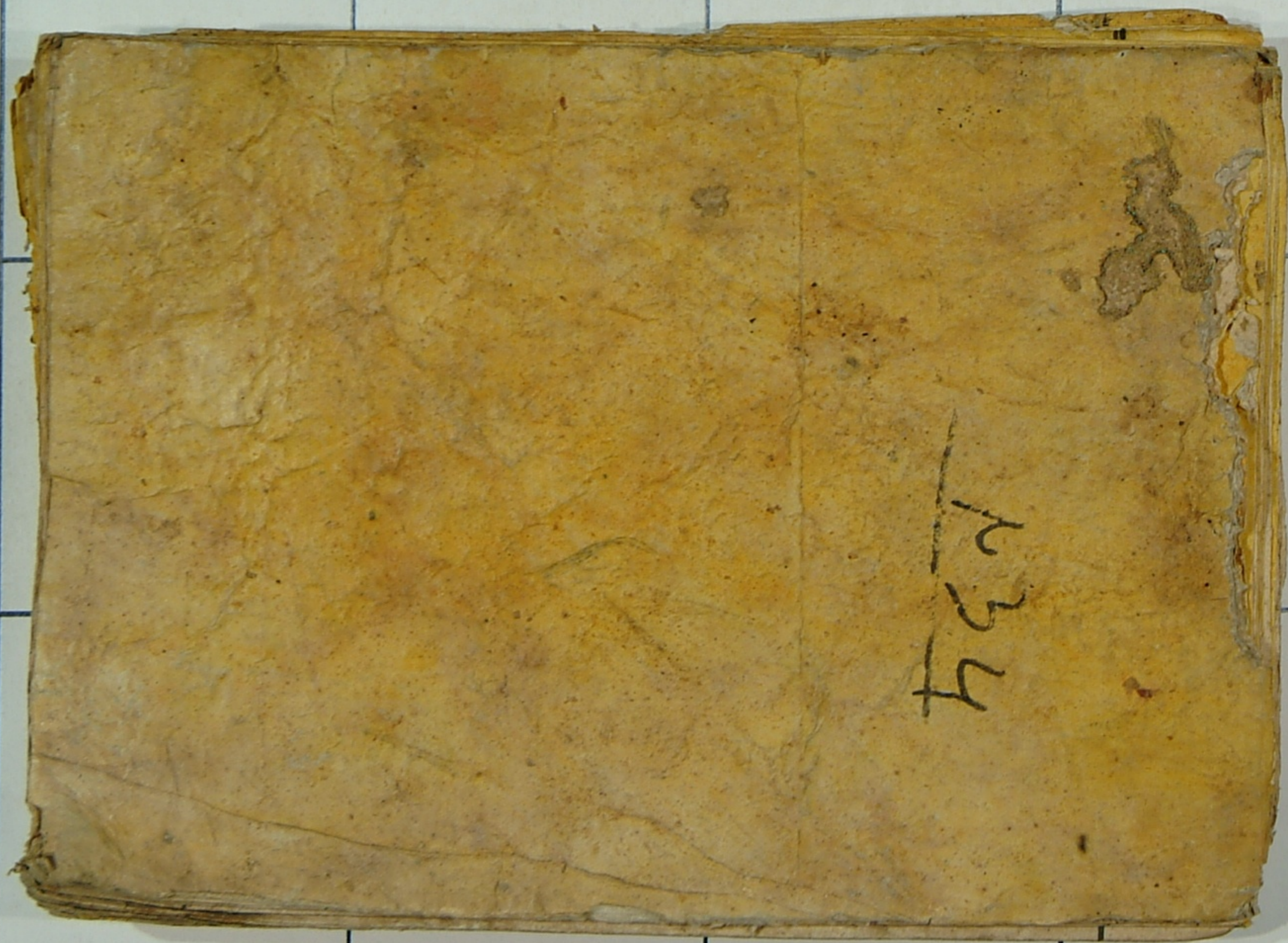
20

25

30

35

40



1234

८३४

श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीपद्मपुत्राय नमः॥ श्रीगुह्य
वर्धन्ये नमः॥ श्रीवत्सलाय नमः॥ श्रीवाग्भर्त्रे नमः
॥ अथ हिमवत्खण्डे कचपुःसखिलिगपति
कमालिखत ॥ यथा ॥ नपातात्पूर्वथा
जन-४-श्रीकृष्णाय नमः-नदरुनलीलावती
सर्वकौमिकीसंगम-दुर्गातीर्थ-इन्द्रायासि
प-माघकृष्णचतुर्दशी-पौषपूर्णिमा-

मनदवांसि

गामाखुसि २
तइरुने ३ याजन - श्रीकामधन - तत्पूर्व - स्व
धनदीतामकोमिकीसंगम - दवतीर्थ - दालका
स - नागकदतीर्थ - २ माघकृष्णपति - च उर्दमी
तत्पूर्वम ३ याजन - श्रीकामधन - तद्विहारी
- जलवतीस्वर्णकोमिकीसंगम - स्वर्णतीर्थ -
काहिसुनखसिंहास ॥ ३ ॥ माघकृष्णद्वितीया ॥ ॥
तत्पूर्वम ३ याजन - श्रीकामधन - तत्पूर्व

अध्वरुसि ३
अध्वरुपर्वतकन्दनकुर्ण - कथपतीर्थ -
मन्धनहारा ॥ ४ ॥ माघकृष्णद्वितीया - चैत्र
कृष्णअष्टमी - आषाढपूर्णिमा ॥ ॥ तद्विहारी
॥ १ याजन - श्रीकृष्णकथन - तद्विहारीचन्द्र
काकिहिमाद्रवासकुम्भकाकितीर्थधूनीधल
यापूर्ववनकृष्णकमिलास ॥ ५ ॥ भिवनाणि - अ
श्विनपूर्णिमा - हलानुतकृष्णचउर्दमी ॥ ॥

तद्विहारीगणपदम्भनं तद्विपत्रिलिङ्गं ॥ धोख
 लस ॥ ॥ तत्पश्चिम २ कामक श्रीचण्डम्भ
 न तद्विहारीगणधनुषि नूपवती नूडावतीस
 गम्भ उग्रतीर्थ राज्याचासखलस ॥ ६ ॥ ॥ शिवनात्री
 तन्मिहारीगणधनुषि श्रीधनम्भन तद्विहारी
 २ गधनुषि नूपवती सकम्भ उग्रतीर्थ राजनद
 विहारीगणपर्वतस ॥ १॥ चण्डकनवमी वेम्भखल
 सूच पुद्गी ॥ २॥ कश्चित्सुकाकनसुहातीर्थमिति वदति २

तत्पश्चिम १ कामक श्रीविकटम्भन तद्विहारीगण
 डावती पुष्पवती सकम्भ पुष्पतीर्थ सांगदम्भ
 न पूर्वस ॥ ७ ॥ शिवनात्री ॥ तद्विहारीगण २ कामक
 श्रीचण्डम्भन तत्पूर्व नूडावतीलीलावतीप
 डावती सकम्भची तीर्थ पनोतिस ॥ ८ ॥ कश्चि
 र्भिमा ॥ ॥ तत्पश्चिम १ कामक श्रीहालम्भन
 तत्पूर्व लीलावतीसुखस्रवासकम्भ गन्धर्वतीर्थ
 आयाहालस ॥ १० ॥ हालननुक्यासकमी ॥

तद्विद्वत् २ कामक श्रीगुफम्पनः तस्यम्बिमप्रता
वतीमिलालसासंगमः सिद्धतीर्थं लालगुरुद
ना ॥ ११ ॥ माघकृष्णमावाणी ॥ ॥ तस्यम्बिम १ या
जन श्रीतिलम्पनः तस्यम्बिमः सनस्वतीमनाव
तीसङ्गमः मनशीतीर्थः शिवदक्षिण नृदकुर्ण
किंकजवत्स सनस्वतीमूर्ति ॥ ॥ तन्नेत्र ३२
धनुषिसनस्वतीकुर्ण ॥ ॥ मनसिलीसा ॥ १२ ॥ म
कनसंक्रांति ॥ ॥ तस्यम्बिम २०० धनुषिः श्री

चैयम्पनः तद्विद्वत् १०० धनुषिः सनस्वतीसङ्गम
सनस्वतीतीर्थः लालदभनपम्बिमखलस ॥ दाद
मपूरुमा ॥ १३ ॥ ॥ तस्यम्बिम १ कामक श्रीना
मम्पनः तद्विद्वत् पलावतीसनस्वतीसङ्गमपला
वतीतीर्थः त्यागलेनव कललताह ॥ चैयपूरु
मा ॥ १४ ॥ दद्विद्वत् ३ याजनः श्रीकालम्पनः
तद्विद्वत् घर्घनावेतनलीसङ्गमः कालतीर्थः
मृगचासः तितिवहनिः मिक्का ॥ हानुतपुक्

चउर्दशी॥१५॥ ॥तस्यम्बिम ३याजनः श्रीनटान
 कम्पनः तद्वत्तुन पर्वतमध्यमिलानिर्मनानद्याः
 वक्तृतीर्थः न्यातनीचा॥ अष्टकब्रह्ममी॥१६॥ ॥
 तद्वत्तुन ३याजनः श्रीउद्दालकम्पनः तद्वत्तिलि.
 ३॥ धनुर्विकुलं नृद कुलतीर्थः हंपिनदीक्षितः
 हासिदालस॥१७॥ तद्वत्तुन १कामकः श्रीरामपा
 लम्पनः तस्यूर्ध्वधर्मवहावाद्यतीसुभमः रामपाल
 तीर्थः गलखुहा हंपिनपूर्वगलमकास॥ एव

नैमिषासंक्रांति ३

पदकब्रह्मचउर्दशीः अष्टकब्रह्ममी॥ ॥तद्वत्तु
 न ४०० धनुर्विमिश्रितिलीयसुगंग॥ सीगमः वा
 द्यतीर्थः दमहनाहासः शिवस्यनेत्रद्वयसुकुल
 तीर्थ॥१८॥ ॥रामपालम्पनोदाययमि खनि
 ध्वरुवलेलगुहायीश्रीखननानायकदर्शनः
 मिखनिनीविष्णुपदीसीगमश्रीविष्णुतीर्थ॥ अष्ट
 पूर्वमाः द्वादशीः सुकाकि॥ ॥तस्यम्बिम २
 याजनः श्रीचंपकम्पनः तद्वत्तिलि चदकाकि

नलकाकिर्गम-वक्रतीर्थ-चिलनपश्चिमविसिख
लस॥ वेभारवक्रवृचउर्ध्वी॥ चैवकृष्णद्वितीया॥ १९॥
॥ ॥ तत्पश्चिम१कामक-श्रीउन्नतश्चत-तत्पश्चि
मिकाकि-स्वर्णकूटादिजासम-स्वर्णतीर्थ-यस्मि
न-मेचय॥ ॥ २०॥ कार्तिकशुक्लपंचमी-हा
लूनशुक्लचतुर्थी॥ ॥ तदक्षिण४००धनुषि-
श्रीनदिकश्चत-तदक्षिण-स्वर्णप्रता-चिगका
किर्गम-नदीतीर्थ-यस्मिन्तदक्षिणस॥ २१॥

चैवकृष्णद्वितीया-वेभारपूर्वमा॥ चैवकृष्णद्वितीया
खु॥ ॥ तत्पश्चिम१कामक-श्रीउन्नतश्चत-त
दक्षिण४००धनुषि-शिवर्ण-उन्नततीर्थ-कूकाल-
दमतउन्न-कूकालस॥ माघशुक्लचतुर्थी॥ २२॥
तत्पश्चिम२कामक-मयलकश्चत-तदक्षिण६०
धनुषि-चिका-अश्वतीसम-तद्वितीर्थ-प
इस-माघशुक्लचतुर्थी॥ २३॥ ॥ तदक्षिणपर्व
तश्रीनानदमूनीश्चतदधर्त-श्रीतीर्थ-तमना

नस॥ ॥ तस्य चिन्म १ या जन श्री कृष्ण न. तद्
 इत् १ काम क ग लु व ती स्व त का कि स. म. ग ल
 व ती र्थे अग्र ग म स॥ २४॥ माघ शुक्ल पंचमी. तत्
 कृष्ण मी द म मी॥ ॥ तद् इत् १ द का म. श्री अरु सि त
 म्भ न. तस्य चिन्म १०० ध न्मि. म क व ती ला न् म ती
 र्ग म अरु सि त ती र्थे. महा दे व व्या सि व ल अ न स॥
 २६॥ अग्र न ख हा स॥ माघ शुक्ल न व मी. दु ती या-दा
 द मी॥ ॥ तद् इत् १ द का म क श्री र्ते न व म्भ न.

तत् वे सि प्रा वा ग लु की र्ग म-ते न व ती र्थे. न वा
 का ट द वी घा ट स॥ माघ शुक्ल च तु र्द मी. चे शु क
 दु ती या-पूर्णि मा॥ २६॥ ॥ तस्य च १ या जन श्री
 व क्म म्भ न. तद् इत् १ द का म क श्री र्ते न व म्भ न.
 ग म व क्म ती र्थे. क वि ला स का स॥ माघ पूर्णि मा-हा
 लु न कृष्ण मी॥ २७॥ ॥ तद् इत् १ द का म क-
 श्री स्क न्द म्भ न. तद् इत् १ द का म क श्री र्ते न व म्भ न.
 ग म स्क न्द ती र्थे॥ न र्ज र्य ता ग स॥ २८॥ वे शु क दु

चरु २
 तीर्थसु ॥ तत्पूर्व २ काष्ठाक श्रीमत्तुदय
 नदिकिलेष्टि विष्णुगंगसंगम नृसिंहती
 र्थे ॥ भिवपूनिचास ॥ २९ ॥ ह्यलूनकसूतुतीया-ऊ
 ष्टसूतुदमी-पूर्णिमा-संकाति ॥ ॥ तत्पूर्व २ का
 ष्ठाकसुन्दनिकातीर्थे ॥ ॥ तत्पूर्व २ काष्ठाक श्री
 काकष्यन-तदधः आकाशग ज्ञायानिर्जन-आ
 काशगङ्गातीर्थे कायतम ॥ ३० ॥ ह्यलूनकसूतु
 चमी-राजसूतुकाचमी-आवगकसूतुचमी ॥ ॥

तत्पूर्व १००० धनुषि श्रीमल्लिचूतुष्यन-तदेव ऊद
 नव-मल्लिऊदतीर्थे लिङ्गमपि ऊद मध्य नवसूतु
 तस्यतिविम्वनूपतिङ्ग ऊदार्किचित्पञ्चमवसूतु
 ॥ मल्लिचूतुदह ॥ ३१ ॥ ह्यलूनकसूतुसफमी-सुता
 कि-चैतुपूर्णिमा-आवगपूर्णिमा ॥ ॥ ददिकिल
 १००० धनुषि ध्यायागष्यन-तत्पञ्चम-यागधाना
 ष्टतिपसिद्धि-यागगंगतीर्थे-तदधः आस्ययाथा
 गङ्गा ॥ वज्रयागिनीस ॥ ह्यलूनकसूतुकाचमी-आम्बि
 नककनवमी ॥ ॥ तत्पूर्व १००० धनुषि-श्रीनानाय

लम्पन. तथैव नानाययी नद्यां क्रदा कान कर्तुं ती
 र्थं. क्रदा तस्य चिमला ग. मिला हि लोभी नानायली
 लम्पन लिङ्गी ॥ महादेव ज्वालास ॥ हलानुन कस्य दम
 मी ॥ ३३ ॥ ॥ तस्य चिम १००० धीक्षा तिलि ॥ लम्प
 न. तदक्षि १००० धन विनानाययी नलावती स
 रुम. थाग तीर्थ. सकादमन उरुन धाकान पिन
 ॥ ३४ ॥ हलानुन शुक्र दृतीया. वेशमय पूर्वमा ॥
 तदक्षि २००० धन विनानाययी नलावती स
 रुम. थाग तीर्थ. महादेव प्रवृत्ति ॥ ३५ ॥

हलानुन कस्य च उर्ध्वी आया दपूर्वमा. चैव सैकाकि
 ॥ ॥ तस्य चिम १००० धन विनानाययी नलावती स
 रुम. थाग तीर्थ. महादेव प्रवृत्ति ॥ ३६ ॥ आवल शुक्र पूर्वमा ॥
 तस्य चिम २००० धन विनानाययी नलावती स
 रुम. थाग तीर्थ. महादेव प्रवृत्ति ॥ ३७ ॥ माय हलानुन शुक्र दृतीया
 धीगन नानायली यानाग पंचमी ॥ ॥ तदक्षि २०००
 धन विनानाययी नलावती स रुम. थाग तीर्थ. महादेव प्रवृत्ति ॥ ३८ ॥

वतीसंगम-वीनहृदतीर्थ-खापदभनपूर्व-खाहादा
 स॥३७॥हालुनयुक्कृतीयापोषपूर्वमा॥ ॥
 तस्यधिम२०० धनुषि-ध्रीमज्जलभ्यनतद्विह-
 वीनहृदनयीहृदतीर्थ-खापादभया-मूलनाभल
 ॥३८॥हालुनयुक्कृपंचमी-चैककृचउदमी॥ ॥
 तदास्यय्याभूर्द्धकाभक-ध्रीविमलभ्यन-तस्यधिम
 १७१धनुषि-विमलगंगय्या-विमलादकतीर्थ-सि
 पादालस॥४०॥हालुनयुक्कृमफमीमार्गभिनक
 कृचउदमी॥ ॥ तस्यधिमभूर्द्धकाभक-ध्रीभूत

कतिभूभ्यन-तद्विह-भृषिकृ-भृषितीर्थ
 भूलालीस॥४१॥हालुनयुक्कृममीरादकृकृ
 धमी॥ ॥ तस्यधिम-धनुषि-ध्रीविष्वरूपभ्यन-
 तद्विह-१७१धनुषि-नदी-वृद्धगङ्गातीर्थ-तवरा
 ल-लंचून-कीधगुं॥४२॥हालुनयुक्कृनवमी-
 चैगमावाणी-॥ ॥ तस्यधिमभूर्द्धकाभक-ध्री
 सामर्तिभूभ्यन-तस्यधिम१००धनुषि-काभगङ्गाप
 नदीसंगम-सामतीर्थ-सालिनस-चरुति॥
 ४३॥हालुनयुक्कृनकादमी-कार्तिकयुक्कृममी-चउदमी॥

गदसिद्धि धनुषिः श्रीगणेशनाथम्पनः तदा (प्रय्या
 २०० धनुषिः गणेशजी चक्रावती संगमः गणेशजी
 र्थे लुण्ठनपूर्वः हालुनयुक्त द्वादशी योचपूज
 मा ॥ ४४ ॥ तस्यन्विम धनुषिः श्रीगणेशनाथम्पनः त
 न्निष्ठाय ८१ धनुषिः कदः सिद्धि न स तीर्थः मिवस्य
 म न कूपः कुलुनक्षी तीर्थः ॥ सुनृगधिसा ॥ हालु
 नकूप च उदक्षी वेभ्रखपूजमा ॥ ४५ ॥ ॥
 गदुन २ कामकः श्रीगणेशनाथम्पनः तदीक्ष न कू
 पः मृत्तिकुल तीर्थः ॥ अलदम वा हालुखासः हालु

न पूजमा ॥ ४६ ॥ ॥ तदीक्ष न ३० धनुषिः श्री क
 पिताम्पनः तदुन १ धनुषिः कूप उदक कुलु ती
 र्थः ॥ अलदम मंगल श्री ती स म न या का सः चैरु
 सु द्वितीया मिव नारी ॥ ४७ ॥ गदुन ४० धनुषि
 श्री सर्वम्पनः तदुन ८ हस्त गेनी कुलु गेनी
 कुलु तीर्थः लि ५३ गदुन २० हस्त नाग कद तीर्थः
 अलदम का कित ॥ चैरु कूप च उदक्षी च उदक्षी ॥
 ४८ ॥ ॥ तस्यन्विम २ कामकः श्रीगणेशनाथम्पनः तदा
 यथ २१ धनुषिः कवती शकुदी फि संगमः नृद तीर्थः व

लघुखलसा॥४॥चेणकसुखसीमाघकुक्कुटमी-कार्तिक
 कुक्कुटमी॥ ॥तद्वहिलमीनतीर्थ-चेणकसुखमी-आ
 या०कुक्कुटदशी-माघ-कार्तिककुक्कुटदशी॥मीनतीर्थ
 तपस्विममाहतीर्थ॥चेणकसुखमीधमावाभी॥ ॥तत्पुष्पि
 मे२००धनुषिमीचन्द्रनाटपन-तद्वहिल६००धनुषि
 खर्बुधानाभकुदीफिसंगमरसगजातीर्थ-नवलिक
 स-नवम्ब०॥चेणकसुखमी॥५०॥तद्वहिलभकुकुल-
 दहवा॥ ॥तद्वहिल२००धनुषि-मीयसुखन-तत्पुष्पि५०
 कुल-यसुखतीर्थ-अचंगुआदसा॥माघकुक्कुटचउदमी॥
 ५१॥ ॥तत्पुष्पिमभिलननानायला॥ ॥तद्वहिल२००

भक-मीचलिकम्पन-तद्वहिल१००धनुषि-कुल-पिणान
 कतीर्थ॥तावायागुस-चेणकसुखचउदमी॥५२॥ ॥
 तत्पुष्पि१०००धनुषि-मीधर्मम्पन॥तद्वहिल२००धनुषि
 अष्टिनाधर्मगंगसंगम-धर्मतीर्थ-विष्णुनाहननेक
 यसा॥अष्टमावासा॥५३॥ ॥तत्पुष्पि२००धनुषि-मी
 भककुलम्पन-तद्वहिल१००धनुषि-वाग्मतीचन्द्रनासा
 सङ्गम-पीतामहतीर्थ॥भककुल॥चेणमावाभी-आ
 वल्यमावाभी-तादकुक्कुटचउदमी॥५४॥तद्वहिल
 वाग्मतीपस्विम-मीहनुमकम्पनहनुतीर्थ-तद्वहिल

लिङ्गं चैव शुक्लं तृतीयां राहुं कुं दृतीया ॥ गद्दिकिला
३काभकं श्रीकाटीभन. तन्नेकृत्य - धनुषि. वागमती. म
निमती. नृदधानासंगम. शिखमूल तीर्थं जलकाटिवाहाल
स॥ चैव शुक्लचउर्द्वी ३ पूर्णिमा ॥ ५५ ॥ तद्भुत १०० धनु
षि. श्रीवाल्म्यन. तच्च उषि विदिदुः कुरुच उष्टय उष्टन
चैककुरु. वागगंगतीर्थ. वाल्म्यनराजस॥ चैव शुक्लच
उर्द्वी ॥ ५६ ॥ ॥ गद्दयय १००० धनुषि. श्रीलान्धन
तत्पूर्व १० धनुषि. लान्धनकुरु. तदाग्र्या १०० धनुषि.
श्रुतिनामघी. मयूनतीर्थ. चलानस. चैव शुक्लवष्टी

शुद्धमी ॥ ५७ ॥ तत्पूर्व ३०० धनुषि. श्रीपर्वतभन. त
द्भुत १० धनुषि. कुरु. लान्धनकुरु तीर्थ. पशुपतिन उ
ष्टन पर्वतचास. चैव शुक्लकादमी. भवसपूर्णिमा ॥ ५८ ॥
तत्पूर्व २२५ धनुषि. श्रीजलभन. तत्वेव जलभन तीर्थ.
गुक्षम्पनी घाट्यादधुस॥ चैव शुक्लदृतीया ॥ ५९ ॥ ॥
गद्दिकिला २५ धनुषि. श्रीगुक्षम्पन. तदाग्र्या. गुक्षम्प
नीकुरु. गुक्षम्पनी तीर्थ. चैव शुक्लचउर्द्वी. आभिन
कृष्णाष्टमी. चउर्द्वी. गुक्षम्पनीस ॥ ६० ॥ ॥ तत्पश्चि
म १५० धनुषि. श्रीकिनाटभन. गद्दिकिला धनुषि

वाग्मयी नृदसहस्रतीर्थं. एतेनीघाटयाचास. चैत्रपूर्णि
 मावेभ्रखशुक्लाष्टमी. कार्तिककृष्णचतुर्दशी ॥ ६१ ॥
 गदाक्षि ११०० धनुषि श्रीरत्नम्पन. गदाक्षि वाग्मयी
 एस्मगंगतीर्थं. एतलकातिक्क. नानकवानीस ॥ वेभ्रख
 कृष्णनवमी. मार्गमावास्या ॥ ६२ ॥ ॥ तत्पुर्वम ८०० धनु
 षि श्रीरत्नम्पन तत्पुर्वमहम् २० कृष्णानकृष्णतीर्थ
 एतल. एतवाहातजगमननिचास ॥ वेभ्रखकृष्णकाद
 णी. माघकृष्णष्टमी. पोषकृष्णचतुर्दशी ॥ ६३ ॥ ॥ ग
 दाक्षि १००० धनुषि. श्रीनृद्रागनम्पन. गदाक्षि यातगुव

कृष्ण. नृदस्तानादकतीर्थं. पशुपतिनवायवस. वेभ्रख
 कृष्णयादमी. आषाढपूर्णिमा ॥ ६४ ॥ ॥ तत्पुर्व २१० ध
 नुषि. श्रीवासुकीतागनाडी ॥ तत्पुर्ववाग्मयी. वासुकीती
 र्थं ॥ पशुपति ॥ ॥ तन्नेत्र १००० धनुषि. श्रीपशु
 पतीम्पन ॥ तत्पुर्व. मृगशिरा. स्वर्निका. भिवर्गगर्ग
 गम. आर्यातीर्थं. श्रीपशुपति. कर्कश्याट ॥ ॥
 ॥ इति श्रीचतुष्टयसिद्धिलिंगपत्रिकमानुक्रमलिका ॥ ॥
 सम्वत् १८८९ कार्तिककृष्णयापंचमी. आदिशुवानथ
 कृष्णवल्लभकयगुका ० कायादेवसिद्धिमानसिंहन

स्वार्थहृत्तुनवायधूनकाशलाभुहमस्तुर्वदा ॥
धनपद्मासनासीनी पंचवक्त्राजिलाचनी ॥ जटा
हृत्तधनीदयी किनीटिलभरिताननी ॥ १ ॥ दि
ग्वार्कसर्वदवाही रक्तहृत्कधानिनी ॥ पाष्म
कृष्णधनुर्वीर विन्दुपाणवनाह्यानु ॥ २ ॥ दक्ष
वामक्रमान्निश्व वाहुरिद्धानिनीमदा ॥ मूलम
लागलेल्लहं मध्याकाकसमपरी ॥ ३ ॥ था
गम्वनसभापनी स्नातम्बनी हजाम्यहं ॥ ॥

25

20

15

10

5

0

CMS

5

10

15

20

25

30

35

40



25

20

15

10

5

0

CMS

5

10

15

20

25

30

35

40



श्रीगणेशमयनः॥
 श्रीमहालक्ष्मी — धर्म — १
 श्रीकृमान — कर्मगोर्ध — २
 श्रीविष्णुवी — यथा — ३
 श्रीवक्राधी — दक्षिण — ४
 श्रीमाहेश्वरी — पतिग — ५
 श्रीजाधी — लाहलमदा — ६
 श्रीगणेश — हासायागा — ७
 श्रीक्रीमानी — वृद्धलादभाग — ८
 रणवति — वृद्धला — ९
 श्रीमाहेश्वरी — वृद्धलादभाग — १०

श्रीचामुण्डावावलादभाग — ११
 श्रीहर्म — धर्ममाखल — १२
 श्रीवक्रयोगिनी — पूतवा — १३
 श्रीरणवति — पूतवा — १४
 श्रीविष्णुवी — पूतवा — १५
 श्रीउग्रगानगवाचा — पूतवा — १६
 श्रीकाशनाय — नत्वा — १७
 श्रीविष्णुवी — नत्वाकव — १८
 श्रीकालरेनव — वावहि — १९
 श्रीविष्णुवी — वाधकाकव — २०
 श्रीसिद्धिलक्ष्मी — पूचनी — २१
 श्रीविष्णुवी — जालाप्रवृत्ती — २२
 श्रीविष्णुवी — वक्रलयाकर्म — २३

धी॥
 धीकोमानो-लोकबोहाको-३७
 धीकोमानो-बवाहाचगर्क-३९
 धीवेध्रवी-बवाहावनीसिमाक-३८
 धीवेध्रवी-बवाहाधनाचोर्क-३९
 धीहगवणि-गवाहासग-४०
 धीवेध्रवी-गवाहादउगम-४१
 धीगलध-गवाहाउपाध्याकंद-४२
 धीवेध्रवी-चलध्रवीयाक-४३
 धीवानुध-चलध्रवाहाल-४४
 धीसिधिलकी-चलध्रुकात-४५
 धीगमसत-क्यायवाहाधकासि-४७
 धीमहालकी-काकर्पिवाहा-४९

श्रीचण्डिका — स्वनिष्कपूषसिद्ध
 श्रीहनसिद्धि — कथुदव — ४८
 श्रीवानाहि — गवनति — ४९
 श्रीरुनेव — गापाहिनि — ५०
 श्रीगुवनभनी — नवहीगमचा — ५१
 श्री नवहीवदयाकुस ५२
 श्रीचामुष्ठा — नवहीकव — ५२
 श्रीहनसिद्धि — धपगकव — ५३
 श्रीरुनेव — धलायचा — ५४
 श्रीरुगवणि — धलायचा — ५५
 श्रीरुडकाली — कालयुगमचा — ५६
 श्रीहनसिद्धि — कालयुगमचा — ५७

श्रीरुनेव — जगापाहका — ५८
 श्रीहनसिद्धि — जगापाहका — ५९
 श्रीचामुष्ठा — जगापाहका — ६०
 श्रीरुनेव — गलाकिरीजनामिधुका
 श्रीचामुष्ठा — धीवाहाकव — ६३
 श्रीधुमावणि — धीवाहानति — ६४
 श्रीचामुष्ठा — कवाहानधुनति ६५
 श्रीरुगवणि — कवहालाकि — ६७
 श्रीरुनेव — कीरिधला — ६८

श्रीमकथनी- कीर्तिकव- १८
 श्रीगुक्षणी- कीर्तिदवचक- १०
 श्रीवक्त्रला- कीर्तिदवचक- ११
 श्रीचामुष्ण- कीर्तिदवचक- १२
 श्रीकीर्तिमल- कीर्ति- १३
 श्रीउत्तरुत्तरनव- कीर्ति- १४
 श्रीवक्त्रवीवजला- कीर्तिपी०- १५
 श्रीगुक्षणी- कीर्तिवहीक- १६
 श्रीहनासिद्धि- कीर्तिवहीक- १७
 श्रीरुगावति- रुग्णाक्ष- १८
 श्रीवानाहि- आलका- १९

श्रीवानाहि- रधीतिल- २०
 श्रीचामुष्ण- सिकावहि- २१
 श्रीगुक्षणी- सयक्ष- २२
 श्रीचामुष्ण- आचुखाल- २३
 श्रीकोमानी- वहितिककव- २४
 श्रीरुत्तरनव- अपिबहीका- २५
 श्रीकोमानी- आवाहाकव- २६
 श्रीरुगावति- चामु- २७
 श्रीरुत्तरनव- चामुहादाल- २८
 श्रीरुत्तरनव- रवपिक्क- २९

श्रीकोमानी-चाभद्रकायाकुं-८१
 श्रीरेनव-चाभद्रीमदवयाका-८२
 श्रीरेनव-चाभद्रधसि-८३
 श्रीरेनव-चाभद्र-८४
 श्रीरेनवाहा-रेताकुं-८५
 श्रीहनसिद्धि-स्वयमगत-८६
 श्रीमहालक्ष्मी-मार्गजीस्वध-८७
 श्रीरुचा-मीनलेधधुपसत
 श्रीलीमदव-मीनवीधुचपा-८८
 श्रीमूलकुं-मुकुं-८९
 श्रीरेनव-मुकुंका-९०

श्रीहनसिद्धि-आलवृगलध-९१
 श्रीगुणभनी-वर्कवाहा-९२
 श्रीकोमानी-मंगार-९३
 श्रीकोमानी-अगुवाहाकव-९४
 श्रीकोमानी-चपाजाकि-९५
 श्रीचपादव-चपाजाकि-९६
 श्रीकोमानी-चपाधकापिन-९७
 श्रीकोमानी-काकुं-९८
 श्रीमहालक्ष्मी-काकुं-९९
 श्रीकोमानी-गुणर-१००
 श्रीकोमानी-रिक्काहाचगुर्क-१०१

श्रीकोमानी-हिकुवाहायासुगर्क ११२
 श्रीरेनव-हिकुवाहायादधु ११३
 श्रीदूचा-हिकुवाहायादुचाक ११४
 श्रीकोमानी-हिकुवाहाकिलदूचाक ११५
 श्रीकोमानी-पिलाकुचाकयाक ११६
 श्रीकोमानी-इपानलाकि ११७
 श्रीरेनव-सकाधल ११८
 श्रीकोमानी-सकावाहा ११९
 श्रीकोमानी-सकवाहा १२०
 श्रीरेनव-चीक १२१
 श्रीवानाही-भालाक १२२

श्रीरेनवभालाक १२३
 श्रीरगवति-भालाकपुमानयाक १२४
 श्रीसिद्धिलका-रीग १२५
 श्रीकोमानी-ग्याजदडा १२६
 श्रीकोमानी-काकननीकव १२७
 श्रीकोमानी-काकननीकमिर्पाक १२८
 श्रीमि-धूलाचागमपुसि १२९
 श्रीरेनव-धूलाक १३०
 श्रीकोमानी-ककुवाहागलियादडा
 श्रीदूचा-ककुवाहासिमाका १३२
 श्रीकोमानी-आकवाहाकव १३३

श्रीकोमानी-आकवाहापभिर्भा १३४
 श्रीकोमानी-आकवाहाद्वर्वा १३५
 श्रीकोमानी-पिनआकवाहाद्वर्वा १३६
 श्रीकोमानी-आकवाहाही १३७
 श्रीसेनव-आकवाहाही १३८
 श्रीकोमानी-नृश १३९
 श्रीमहालक्ष्मी-नृशसगक १४०
 श्रीवानाही-नृशसगक १४१
 श्रीकोमानी-अलमगजकव १४२
 श्रीसिद्धिकाली-सिद्धिगा १४३
 श्रीमहालक्ष्मी-चाजाक १४४
 श्रीकोमानी-गुह्याहावरया १४५

श्रीकोमानी-आकवाहापलिगयाकका
 श्रीकोमानी-शुक्काहा १४६
 श्रीकोमानी-आधवाहा १४७
 श्रीसेनव-मरीक १४८
 श्रीमहालक्ष्मी-धकु १४९
 श्रीपंचकोमानी-शुक्तिगाल १५०
 श्रीमहालक्ष्मी-शुक्काहाचीणानि १५१
 श्रीमहालक्ष्मी-शुक्काहादव १५२
 श्रीवक्ता-शुक्काहादव १५३
 श्रीद्वेषा-शुक्काहा १५४
 श्रीमहालक्ष्मी-सुधुकेव १५५
 श्रीदेवुवी-सुधुकेवप्रसा १५६

श्रीरवान्नी-वपालि-॥ १५९
 श्रीचाम्पू-॥ १६०
 श्रीकोटनाक-॥ १६१
 श्रीकोमान्नी-॥ १६२
 श्रीचञ्चल-॥ १६३
 श्रीचञ्चल-॥ १६४
 श्रीमहालक्ष्मी-॥ १६५
 श्रीरगवति-॥ १६६
 श्रीवैष्णवी-॥ १६७
 श्रीकृष्ण-॥ १६८
 श्रीमहालक्ष्मी-॥ १६९

श्रीमहालक्ष्मी-॥ १७०
 श्रीस्वर्ण-॥ १७१
 श्रीकाल-॥ १७२
 श्रीरगवति-॥ १७३
 श्रीवैष्णवी-॥ १७४
 श्रीमहालक्ष्मी-॥ १७५
 श्रीरगवति-॥ १७६
 श्रीमहालक्ष्मी-॥ १७७
 श्रीगङ्गा-॥ १७८
 श्रीकोमान्नी-॥ १७९

श्रीमहालक्ष्मी-रत्नानाम् — १८०
 श्रीरुचा-रत्नावाहनाम् — १८१
 श्रीश्यामाङ्ग-लायकम् — १८२
 श्रीमहालक्ष्मी-रत्नावल्याम् — १८३
 श्रीमहालक्ष्मी-रत्नागणेशात्मिका — १८४
 श्रीरत्नावलि-ज्ञानम् — १८५
 श्रीकोमली-सुगमम् — १८६
 श्रीरत्नसिद्धि-सुगमकल्याणम् — १८७
 श्रीमहालक्ष्मी-सुगमम् — १८८
 श्रीकोमली-लयावलीकम् — १८९
 श्रीकोमली-सुगमम् — १९०
 श्रीरत्नव-चाकवाहाकम् — १९१
 श्रीमहालक्ष्मी-रत्नावल्याम् — १९२

श्रीमहालक्ष्मी-रत्नावल्याम् — १९३
 श्रीमहालक्ष्मी-पाकवाहनाम् — १९४
 श्रीरत्नावलि-रत्नरत्नानाम् — १९५
 श्रीमहालक्ष्मी-रत्नरत्नानाम् — १९६
 श्रीमहालक्ष्मी-सुगमम् — १९७
 श्रीमहालक्ष्मी-सुगमम् — १९८
 श्रीमहालक्ष्मी-सुगमम् — १९९
 श्रीरत्नव-चाकवाहाकम् — २००
 श्रीरत्नव-चाकवाहाकम् — २०१
 श्रीरत्नव-चाकवाहाकम् — २०२
 श्रीरत्नव-चाकवाहाकम् — २०३
 श्रीरत्नव-चाकवाहाकम् — २०४
 श्रीरत्नव-चाकवाहाकम् — २०५

श्रीशेनव गीतवाहा — २०६
 श्रीमलन क्रीकालि. गीगादथा — २०७
 श्रीजकनाजावदकधगिदमाच्छकका — २०८
 श्रीसिद्धिनक्रीधगिदथागम — २०९
 श्रीशेनवाली. दीधकादथागम — २१०
 श्रीवीनचाप्रजा. स्वाकिंनग — २११
 श्रीहनसिद्धि. नग — २१२
 श्रीशाली. नग — २१३
 श्रीचानि — न्द्रप्रवृत्ति — २१४

वरवृ
 चपा
 लया
 वि
 धम
 चेष
 न
 श्री
 शीम
 मूल
 श्री
 ना
 य
 श्री
 दी.
 प
 दी
 पिथम
 चेष
 नी
 नाथ
 विषय
 कर्मा
 हिठिमा
 मल
 वना
 ही
 मल
 वना
 ही
 इलीया
 कावृनायया
 वर
 ज्ञान
 मय
 व
 धनी
 व
 धन
 मूल
 वदक



श्रीध धन्यागल.

वद क
वा न
प्रका रे
मा हु
को मा
वे व
मूलसि
द्विलक्ष
ख कु
वा ना
हो आ
वा म
ग ले
को
या गि
वा न

वद
कमल

कापा
लिक

कसिगीधया॥

म
ल
क्ष
पाल
वा

श्री धीयाया॥

पद ना
वा न
ग ले
प्रका रे
मा हु
को मा
वे व
मूलसि
द्विलक्ष
ख कु
वा ना
हो आ
वा म
ग ले
को
या गि
वा न

श्रीकव

होया॥

वा न
रे न
मा हु
को मा
वे व
मूलसि
द्विलक्ष
ख कु
वा ना
हो आ
वा म
ग ले
को
या गि
वा न

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible][illegible]